

विचार बिन्दु

प्रत्येक कार्य अपने समय से होता है उसमें उतारली ठीक नहीं, जैसे पेड़ में कितना ही पानी डाला जाय पर फल वह अपने समय से ही देता है। -वृद्ध

हिंसा तो स्वीकार्य नहीं है!

ह ल में दिल्ली की मुख्य मंत्री के साथ हुई एक बारात ने हमें फिर से सोचने को बिवश किया है कि जिससे हमारी किसी भी तरह की असहमति हो उनके प्रति हमारा व्यवहार कैसा होना चाहिए। राजनीतिज्ञ और राजनीति कार्यकारी दूसरों की तुलना में अधिक दृश्यमान होते हैं, उनके व्यवहार और विचार अधिक लोगों के प्रभावित और उद्देशित करते हैं, और इसी कारण उनके साथ अगर कोई अनुचित घटना होती है तो उसके चर्चा भी अधिक होती है। राजनीतिज्ञों के बाद खिलाड़ी, फिल्म अभिनेता आदि भी अन्यों को तुलना में अधिक ध्यान आकर्षित करते हैं। इनकी तुलना में लेखक कलाकार प्रायः अलक्षित रह जाते हैं कलाकारों में भी स्मृति वाले ज्यादा ध्यान आकर्षित करते हैं जबकि बहुत सारे अन्य विद्यार्थी वाले कलाकार उनमा ध्यान नहीं खींचते हैं।

दिल्ली की मुख्य मंत्री जब अपने कैप कार्यालय में सापाहिक जन सुनवाई कर रही थी तो एक 41 वर्षीय व्यक्ति ने उन्हें कुछ कागज सौंपने के बाद अचानक खिलाना शुरू किया, उनके साथ धर्म-मुख्यमंत्री की ओर कुछ अन्य अनुचित व्यक्ति की पुलिस बोर्डों के अनुसार ऐसा करने वाला व्यक्ति अप्रिय अनुचित व्यक्ति की अश्रु और उनकी ताकत को उत्तर एक आदेश से ध्वनि व्यक्ति वह व्यक्ति को एक पूरे प्रेमी बताता है। जैसा कि अप्रिय व्यक्ति को तुलना में लेखक ज्यादा ध्यान दिया जाता है, इसकी तुलना में लेखक कलाकार प्रायः अलक्षित रह जाते हैं कलाकारों में भी स्मृति वाले ज्यादा ध्यान आकर्षित करते हैं जबकि बहुत सारे अन्य विद्यार्थी वाले कलाकार उनमा ध्यान नहीं खींचते हैं।

इसी बीच जो बहुत सारी चर्चाएँ हुई उनमें दिल्ली के संदर्भ में यह भी स्मरण किया गया कि

दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री और आम आदामों पार्टी (AAP) के नेता अधिवेश केजेरीवाल पर भी कई बार हमले हुए हैं। 2014 में उनकी हिस्सत में बात आम आदामों पार्टी और भाजपा कार्यकारियों के बीच खड़ा हुआ है। इसके बाद, उनके सार्वजनिक कार्यक्रमों में उन पर ध्वनि व्यक्ति, जूते फैकों और अध्यक्ष मारने जैसे हमले हुए हैं। यहीं यह बात भी कम गैर तरब नहीं है कि अभी दिल्ली की मुख्य मंत्री के साथ जो अप्रिय व्यक्ति हुआ उसे तो उनकी पार्टी अर्थात् भाजपा ने तुरंत 'लोकतंत्र पर हमला' और सामाजिक 'राजनीतिक साझिश' बता दिया किंतु जब अधिवेश केजेरीवाल के साथ ऐसा ही प्रयत्न एकाधिक बात हुआ तो उस दल की प्रतिवाप एकदम ऊट थी। वैसे ऐसा ही आम तौर पर होता है कि यह हमें प्रिय होता है जैसा कि वाले जैसे हमारी नजरिया उस नजरिये से खिल जाता है जैसे वाले जैसे हमारी अप्रिय व्यक्ति के बारे में रखते हैं। प्रिय के साथ ज्ञान-सीधी अशिष्टा (हिंसा तो बहुत बड़ी बात है) हमें अखरी है और हम उनकी आलोचना करते हैं जबकि जो हमें प्रिय नहीं होता है या जिससे हमारी असहमति होती है उसके प्रति की गई हिंसा तक हमें जवाब लगती है। इस बात का साथ सेवा बड़ा उद्देश्य माना जाता है। 30 जनवरी 1948 को नाश्तामा गोड़े से उनके बाद उसे उनके बाद अप्रसंक उनकी हत्या के बाद रंगिन करते हैं जबकि जो महात्मा गांधी के सोच से असहमति थी और वैसे ऐसा ही उस बाद अप्रसंक उनकी हत्या के बाद जैसा सम्मान सूचक नाम देकर इस क्रृत्य को न केवल उनकी बल्कि प्रशंसनीय भी घोषित करते हैं।

और ऐसा केवल शारीरिक हिंसा के मामले में ही नहीं होता है या जिससे असहमति होती है और अन्य अनुचित अधिव्यक्तियों को एक खास संदर्भ में कभी असंसदीय कहा जाता है तो आम भाषा में गाली या अप्रशंक कहा जाता है।

हिंसा तो सोशल मीडिया का चलन

बढ़ा है भाषिक हिंसा करने वालों की तो जैसे मौज ही हो गई है। उन्हें यह नया और कारगर हथियार मिल गया है। वे

किसी की भी इज्जत धूल में मिला सकने की जैसे निर्बाध आजादी और क्षमता पा गए हैं। इधर एक और नई बात हुई है।

समर्थ और समृद्ध राजनीतिक दलों ने

अपने मीडिया एकांशों (सेलों) और आईटी

एकांशों के माध्यम से संस्थानीय रूप से

वैतनिक आधार पर यह काम करवाने की नई व्यवस्था चलन में लाई है।

हिंसा तो सोशल मीडिया का चलन भी होता है जैसे वालों की तो जैसे मौज ही हो गई है। उन्हें यह नया और कारगर हथियार मिल गया है। वे

जैसे निर्बाध आजादी और क्षमता पा गए हैं। इधर एक और नई बात हुई है।

हिंसा तो सोशल मीडिया का चलन भी होता है जैसे वालों की तो जैसे मौज ही हो गई है। उन्हें यह नया और कारगर हथियार मिल गया है। वे

जैसे निर्बाध आजादी और क्षमता पा गए हैं। इधर एक और नई बात हुई है।

हिंसा तो सोशल मीडिया का चलन भी होता है जैसे वालों की तो जैसे मौज ही हो गई है। उन्हें यह नया और कारगर हथियार मिल गया है। वे

जैसे निर्बाध आजादी और क्षमता पा गए हैं। इधर एक और नई बात हुई है।

हिंसा तो सोशल मीडिया का चलन भी होता है जैसे वालों की तो जैसे मौज ही हो गई है। उन्हें यह नया और कारगर हथियार मिल गया है। वे

जैसे निर्बाध आजादी और क्षमता पा गए हैं। इधर एक और नई बात हुई है।

हिंसा तो सोशल मीडिया का चलन भी होता है जैसे वालों की तो जैसे मौज ही हो गई है। उन्हें यह नया और कारगर हथियार मिल गया है। वे

जैसे निर्बाध आजादी और क्षमता पा गए हैं। इधर एक और नई बात हुई है।

हिंसा तो सोशल मीडिया का चलन भी होता है जैसे वालों की तो जैसे मौज ही हो गई है। उन्हें यह नया और कारगर हथियार मिल गया है। वे

जैसे निर्बाध आजादी और क्षमता पा गए हैं। इधर एक और नई बात हुई है।

हिंसा तो सोशल मीडिया का चलन भी होता है जैसे वालों की तो जैसे मौज ही हो गई है। उन्हें यह नया और कारगर हथियार मिल गया है। वे

जैसे निर्बाध आजादी और क्षमता पा गए हैं। इधर एक और नई बात हुई है।

हिंसा तो सोशल मीडिया का चलन भी होता है जैसे वालों की तो जैसे मौज ही हो गई है। उन्हें यह नया और कारगर हथियार मिल गया है। वे

जैसे निर्बाध आजादी और क्षमता पा गए हैं। इधर एक और नई बात हुई है।

हिंसा तो सोशल मीडिया का चलन भी होता है जैसे वालों की तो जैसे मौज ही हो गई है। उन्हें यह नया और कारगर हथियार मिल गया है। वे

जैसे निर्बाध आजादी और क्षमता पा गए हैं। इधर एक और नई बात हुई है।

हिंसा तो सोशल मीडिया का चलन भी होता है जैसे वालों की तो जैसे मौज ही हो गई है। उन्हें यह नया और कारगर हथियार मिल गया है। वे

जैसे निर्बाध आजादी और क्षमता पा गए हैं। इधर एक और नई बात हुई है।

हिंसा तो सोशल मीडिया का चलन भी होता है जैसे वालों की तो जैसे मौज ही हो गई है। उन्हें यह नया और कारगर हथियार मिल गया है। वे

जैसे निर्बाध आजादी और क्षमता पा गए हैं। इधर एक और नई बात हुई है।

हिंसा तो सोशल मीडिया का चलन भी होता है जैसे वालों की तो जैसे मौज ही हो गई है। उन्हें यह नया और कारगर हथियार मिल गया है। वे

जैसे निर्बाध आजादी और क्षमता पा गए हैं। इधर एक और नई बात हुई है।

हिंसा तो सोशल मीडिया का चलन भी होता है जैसे वालों की तो जैसे मौज ही हो गई है। उन्हें यह नया और कारगर हथियार मिल गया है। वे

जैसे निर्बाध आजादी और क्षमता पा गए हैं। इधर एक और नई बात हुई है।

हिंसा तो सोशल मीडिया का चलन भी होता है जैसे वालों की तो जैसे मौज ही हो गई है। उन्हें यह नया और कारगर हथियार मिल गया है। वे

जैसे निर्बाध आजादी और क्षमता पा गए हैं। इधर एक और नई बात हुई है।

हिंसा तो सोशल मीडिया का चलन भी होता है जैसे वालों की तो जैसे मौज ही हो गई है। उन्हें यह नया और कारगर हथियार मिल गया है। वे

जैसे निर्बाध आजादी और क्षमता पा गए हैं। इधर एक और नई बात हुई है।

हिंसा तो सोशल मीडिया का चलन भी होता है जैसे वालों की तो जैसे मौज ही हो गई है। उन्हें यह नया और कारगर हथियार मिल गया है। वे

जैसे निर्बाध आजादी और क्षमता पा गए हैं। इधर एक और नई बात हुई है।

हिंसा तो सोशल मीडिया का चलन भी होता है जैसे

